Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/

(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उच्च माध्यमिक विद्यालय के पुरष और महिला छात्रों की पहली भाषा 'हिंदी' में पढ़ने की समझ पर अध्ययन

कृष्ण मोहन सिंह, शोध छात्र, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश
डॉ. जी पी मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

सारांश

न केवल भाषा और साक्षरता के लिए बल्कि आगे की शिक्षा और बेहतर जीवन के लिए भी पठन कौशल बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन बिना समझे पढ़ना बेकार है। 'पढ़ने की समझ' कौशल पढ़ने के आनंद और प्रभावशीलता को बढ़ाता है। मजबूत 'पढ़ने की समझ' कौशल अन्य सभी विषयों और व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में मदद करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रयागराज, में लड़कों के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी में सटीकता, समझ और पढ़ने की गति के संदर्भ में हिन्दी सीखने वालों की पढ़ने की कठिनाइयों को निर्धारित करना है। यह भी जांच की गई कि क्या ये कठिनाइयाँ उचित हिंदी भाषा के प्रदर्शन की कमी या आनुवंशिक भाषा की दुर्बलताओं के कारण थीं। अध्ययन से ये निष्कर्ष निकाला गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पुरष और महिला छात्रों के बहुविकल्पीय परीक्षण के माध्यम से आयोजित प्रथम भाषा हिंदी में पढ़ने की समझ के प्रदर्शन में काफी भिन्नता है और महिला छात्रों का औसत स्कोर पुरुष छात्रों की तुलना में बेहतर है। तथा पुरष और महिला छात्रों के क्लोज परीक्षण के माध्यम से आयोजित प्रथम भाषा हिंदी में पढ़ने की समझ के प्रदर्शन में काफी भिन्नता है और महिला छात्रों का औसत स्कोर लड़कों की तुलना में बेहतर है।

परिचय

पढ़ना हिंदी भाषा के आवश्यक घटकों में से एक है। दूसरी भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग करने वाले देशों को कभी-कभी पढ़ने और समझने में कठिनाई होती है। कई शोधों के अनुसार , मातृभाषा ने दूसरी भाषा सीखने में कुछ हस्तक्षेपों को सिद्ध किया है। इस अध्ययन ने नेल एनालिसिस ऑफ रीडिंग एबिलिटी परीक्षण का उपयोग करके सटीकता , समझ और दर के संदर्भ में युवा दूसरी भाषा सीखने वालों की पढ़ने की कठिनाइयों के परिणामों की जांच की। अध्ययन हैदराबाद , भारत में लड़कों के लिए एक हाई स्कूल में किया गया था और इसमें 10-12 वर्ष की आयु के ग्रेड पांच को शामिल किया गया था। हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में पढ़ने की कठिनाइयों को समझने के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया। समंक संग्रह उपकरण के रूप में साक्षात्कार , पठन परीक्षण और अवलोकन आयोजित किए गए थे। निष्कर्षों से पता चला कि इन विषयों में कोई विशिष्ट भाषा हानि नहीं थी, लेकिन उनके पास भाषा के प्रदर्शन और उपयोग की अलग-अलग डिग्री थी, जिससे अंग्रेजी भाषा के पाठ पढ़ने के दौरान खराब सटीकता, समझ और पढ़ने की दर कम हो गई। पांच छात्रों (50%) को उनके कालानुक्रमिक और पढ़ने की उम्र के बीच संगतता के मूल्यांकन के बाद पाठकों के निम्न स्तर पर , तीन (30%) उच्च स्तर पर, और दो (20%) को हल्के स्तर पर वर्गीकृत किया गया था। यह सुझाव दिया जाता है कि शिक्षकों को पहले उन

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

छात्रों का आकलन करना चाहिए जो पढ़ने की सटीकता और समझ में संघर्ष करते हैं और फिर स्कूल और घर पर होने वाली भाषा सीखने और अधिग्रहण में उनकी सहायता करते हैं।

किसी भी भाषा में पढ़ना हमारी शिक्षा प्रणाली और सामाजिक जीवन में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। पढ़ने की प्रक्रिया अन्य कार्यों जैसे लेखन, शब्दावली पहचान, उपयोग, व्याकरण की उन्नति, और उत्कृष्ट वर्तनी (चंद्रन और शाह,2019,) के लिए अवसर है।

पठन कौशल सुनने और बोलने से भिन्न होता है। यह चार भाषा कौशलों में सबसे आवश्यक कौशल है: सुनना, बोलना, लिखना और पढ़ना क्योंकि यह समग्र भाषा दक्षता में सुधार कर सकता है (क्रैशन एंड ब्राउन , 2007)। यह किसी व्यक्ति की सफलता से भी जुड़ा है क्योंकि यह उन्हें लिखित या मुद्रित सामग्री को समझने में मदद करता है जो उन्हें उनके पेशेवर जुड़ाव और बातचीत में मदद करता है। दूसरी भाषा (ईएसएल) के रूप में अंग्रेजी का उपयोग करने वाले देशों को कभी-कभी पढ़ने और समझने में कठिनाई होती है।

'पढ़ने की समझ ' केवल व्यक्तिगत शब्दों को समझना नहीं है , जब हमारी आंखें उन पर से गुजरती हैं। इसके बजाय, सभी समझ मॉडल पाठकों के लिए पाठ का एक मानसिक प्रतिनिधित्व बनाने की आवश्यकता पर जोर देते हैं, एक ऐसी प्रक्रिया जिसके लिए दुनिया में घटनाओं से संबंधित जानकारी के लिए शाब्दिक विशेषताओं से लेकर ज्ञान तक के स्रोतों की एक श्रृंखला में एकीकरण की आवश्यकता होती है (गार्नहैम , 2001; गर्न्सबैकर, 1990)

विशेष रूप से हिन्दी को सटीकता से पढ़ना और समझना, शिक्षार्थियों, शिक्षकों और माता-पिता के लिए एक बड़ी चुनौती है क्योंकि युवा शिक्षार्थियों को उचित सक्षम वातावरण , सामाजिक परिवेश और भाषाई क्षमताओं में अच्छी तरह से वाकिफ साथियों के लिए आवश्यक जोखिम की कमी हो सकती है। . हिन्दी के साथ युवा शिक्षार्थियों में पढ़ने और अन्य भाषाई कौशल बनाने में प्रकृति और पोषण अपनी भूमिका निभाते हैं। छोटे बच्चों में हिन्दी सीखने की बाधाओं पर काबू पाने में पोषण और समाजीकरण एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

पुरष और महिला छात्रों की 'पढ़ने की समझ' क्षमताओं की जांच और तुलना करना।

परिकल्पना

- एच1. बहुविकल्पीय परीक्षण में हिन्दी भाषा के 'पढ़ने की समझ' कौशल में पुरष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- एच2. क्लोज परीक्षण में हिन्दी भाषा के 'पढ़ने की समझ' कौशल में पुरष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- एच3. दोनों परीक्षाओं बहुविकल्पीय परीक्षण और क्लोज परीक्षण में (हिन्दी भाषा के 'पढ़ने की समझ' कौशल में पुरष और महिला छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

पहली भाषा का पठन बोध कौशल

वर्तमान अध्ययन इस धारणा के साथ किया गया है कि जेंडर रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन के कौशल को प्रभावित नहीं करेगा। प्रयागराज में सभी पहलुओं में लड़कियों और लड़कों के बीच थोड़ा सा सांस्कृतिक अंतर है। स्कूली

शिक्षा के दौरान, यह दिखाया गया है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों को स्कूलों से जल्दी से हटा दिया जाता है जो लड़कियों की शिक्षा के प्रति पूरे समाज के दृष्टिकोण को दर्शाता है। लड़के दोस्त चुनने और दोस्तों के समूह के साथ अपना समय बिताने के लिए स्वतंत्र हैं। वे स्वीकार करने और कॉल करने या दोस्तों से मिलने के लिए स्वतंत्र हैं। न केवल उन्हें अपने परिवार द्वारा दोस्तों को बुलाने और मिलने की अनुमति दी जाती है , बल्कि उन्हें दूसरों के साथ यात्रा पर जाने की भी अनुमति दी जाती है , जहां उन्हें जोखिम का मिश्रण मिल सकता है। लड़के घर के अंदर और बाहर भी स्वतंत्र होते हैं और वे बालिकाओं की तरह ज्यादा नियंत्रित और प्रतिबंधित नहीं होते हैं। तुलनात्मक रूप से वे केवल अपना ही सोचते हैं , और अपनी पसंद-नापसंद के अनुसार कदम उठाते हैं। इस प्रकार वे लड़कियों की तुलना में घर के साथ-साथ स्कूल में भी अधिक दबंग हैं।

लड़कों को अपनी शिक्षा में भी निर्णय लेने की अधिक स्वतंत्रता है। वे अध्ययन के पाठ्यक्रम का चयन कर सकते हैं; वे अधिक स्वतंत्र रूप से कार्रवाई कर सकते हैं। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए अपने घर और इलाके से दूर जाने की अनुमति है। इसके विपरीत , लड़कियों को अपने परिवार द्वारा या कई प्रतिबंधों के साथ अपने अध्ययन के पाठ्यक्रम को चुनने के लिए मजबूर किया जाता है। अपनी बेहतर शिक्षा के लिए परिवार से दूर-दराज के स्थानों पर जाने की अनुमति प्राप्त करना बहुत आसान नहीं है। माता-पिता अपनी लड़कियों को अधिक अवसर देने के लिए इतने इच्छुक नहीं हैं , इसलिए वे भरते हैं कि उन्हें पास के स्कूलों या शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षित करना बेहतर है , हालांकि जिन पाठ्यक्रमों या विषयों में उनकी रुचि है , वे उन संस्थानों में उपलब्ध नहीं हैं , उन्हें शामिल होने के लिए मजबूर किया जाता है। वहां और मजबूरन अपने माता-पिता की पसंद को ही पढ़ना।

अपनी शारीरिक स्थिति और घर पर कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के कारण लड़कियां अपने खाली समय का उपयोग अपनी पढ़ाई के लिए नहीं कर पाती हैं। उन्हें अपनी मां के साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्यों की भी मदद करनी चाहिए। साथ ही उन्हें परिवार के छोटे सदस्य का भी ख्याल रखना होता है। दूसरी ओर लड़कों के पास पढ़ने के लिए अधिक समय होता है और वे उपलब्ध अध्ययन समय का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं। माता-पिता घर में कोई कर्तव्य करने के लिए नहीं कह रहे हैं ; वे हमेशा अपने माता-पिता द्वारा पढ़ने और केवल पढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं। साथ ही लड़कों को सह-पाठ्यचर्या और पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो लड़कियों को मना कर दिया जाता है , हालांकि वे उनमें रुचि रखते हैं। लड़कियां अपनी छुपी हुई प्रतिभा को दिखाने में असमर्थ होती हैं और एक खोल में पीछे रह जाती हैं।

उपरोक्त कारणों से यह अपेक्षा की जाती है कि लड़कों को पढ़ने की समझ के कौशल में बेहतर उपलब्धि होनी चाहिए, लेकिन वर्तमान अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि लड़कियां अलग-अलग बहुविकल्पीय परीक्षण और क्लोज परीक्षण में लड़कों से बेहतर हैं और जाहिर तौर पर दोनों परीक्षा परिणाम के स्कोर में हैं।

यह उनके लिए उपलब्ध सीखने के माहौल की समानता के लिए समर्थन किया जा सकता है। सबसे पहले उन दोनों की स्कूल सेटिंग समान है। बालक एवं बालिकाओं के लिए अलग-अलग पुस्तकालय , कार्यशाला, प्रयोगशाला एवं कक्षा-कक्ष नहीं है। साथ ही उन्हें प्रदान की जाने वाली शिक्षण सामग्री समान होती है और दोनों एक ही शिक्षण पद्धति से गुजरती हैं। परीक्षा और मूल्यांकन का प्रकार लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए समान है। इनके कारण, इलाके और परिवार की शैक्षिक और सांस्कृतिक विविधता का उनके पढ़ने की समझ कौशल पर प्रभाव पड़ता है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यद्यपि लड़कों और लड़कियों को स्कूल के वातावरण में समान अवसर मिलते हैं , फिर भी उनके औसत अंकों के आधार पर गहन विश्लेषण पर कुछ अंतर देखे जाते हैं। रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन स्किल में लड़कियां लड़कों से बेहतर होती हैं। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों की पढ़ने की उपलब्धि बेहतर है।

यह एक तथ्य है कि वर्तमान समय में लड़के और लड़कियों दोनों की हिंदी सीखने की ओर कम रुचि है। हालाँकि, लड़कियों की शिक्षा के प्रति माता-पिता के अनुपयोगी रवैये के बावजूद लड़कियां अपने स्वभाव और विशेषता-धैर्य के कारण अपनी किताबों और सीखने के कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकती हैं। वे सभी निर्देशों पर ध्यानपूर्वक ध्यान देते हैं और खुशी-खुशी काम को निरंतर और व्यवस्थित तरीके से करते हैं जैसा कि प्रोफेसर हलदर ने आमने-सामने साक्षात्कार में कहा है। वे अपने प्रयास में नियमित हैं और बिना असफलता के निर्देशों का पालन करने और शिक्षकों की अपेक्षाओं को पूरा करने की भावना रखते हैं। वास्तव में कोई निर्धारित भागीदारी देख सकता है कि वे सभी कार्यों और जिम्मेदारियों को स्वीकार करते हैं। प्रोफेसर बंद्योपाध्याय भी इस वर्तमान खोज का समर्थन इस दृष्टिकोण से करते हैं कि पढ़ना , साथ ही इसका अर्थ , इस दृष्टिकोण में लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव नहीं करता है। यह एक सामान्य प्रथा है। लेकिन व्यवस्थित रवैया , पढ़ने में अधिक समय व्यतीत करना , बार-बार पढ़ना , धैर्य - ये पहली भाषा पढ़ने की समझ में लड़कियों की बेहतर उपलब्धि के कारक हो सकते हैं। लेकिन यह कोई ठोस तर्क नहीं है।

बड़ों के साथ अच्छे सामाजिक संबंध और बहुत बातूनी रवैया भी उनकी उच्च उपलब्धि का एक कारण हो सकता है। प्रोफेसर बिस्वास सोचते हैं कि एक बार जब लड़की बोलती है तो वह कभी रुकना नहीं चाहती। लड़कियों की इस प्रकार की आदत इतने सारे शब्दों का उपयोग और स्टॉक करने में मदद करती है और वह भी वर्तमान निष्कर्षों के साथ एक है। जैसा कि वे आम तौर पर सभी के अनुकूल होते हैं , शिक्षक छात्र संबंध अच्छे होते हैं और इससे उनकी उपलब्धि में आसानी हो सकती है। लड़कियां अपने बड़ों और शिक्षकों के बारे में कम आलोचनात्मक होती हैं ; उन्हें बेहतर उपलब्धि के लिए उनका समर्थन मिलता है। माता-पिता या शिक्षक की प्रत्यक्ष भागीदारी से अच्छी पठन समझ कौशल हासिल करना आसान हो जाता है। इस प्रकार बुजुर्ग सोच को प्रेरित कर सकते हैं , और भाषा की क्षमता में लड़कियों की अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। लड़कियों की ये विशेषताएँ उन्हें भाषा सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करने में मदद कर सकती हैं और पढ़ने की समझ में लड़कों की तुलना में उच्च अंक प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं।माता-पिता या शिक्षक की प्रत्यक्ष भागीदारी से अच्छी पठन समझ कौशल हासिल करना आसान हो जाता है। इस प्रकार बुजुर्ग सोच को प्रेरित कर सकते हैं , और भाषा की क्षमता में लड़कियों की अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। लड़कियों की ये विशेषताएँ उन्हें भाषा सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करने में मदद कर सकती हैं और पढ़ने की समझ में लड़कों की तुलना में उच्च अंक प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं।

साहित्य की समीक्षा

भट्टाचार्य (2010) ने पाया कि जो छात्र कम आय वाले परिवार से आते हैं, उनकी पढ़ने की उपलब्धि उच्च आय वाले परिवार से आने वाले छात्रों की तुलना में कम थी। यह भी पाया गया है कि सभी छात्रों ने अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना समान पठन लाभ अर्जित किया।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

करबलाई (2011) ने पाया कि पढ़ने की रणनीति पर निर्देश ने शिक्षार्थियों को पढ़ने की रणनीति के ज्ञान को विकसित करने में मदद की और पढ़ने की रणनीति के बारे में जागरूकता बढ़ाई। पठन रणनीति निर्देश ने शिक्षार्थियों को उनकी दूसरी भाषा पढ़ने की समझ में सुधार करने में मदद की। ईएसएल शिक्षार्थी ईएफएल शिक्षार्थियों की तुलना में रणनीति हस्तक्षेप कार्यक्रम के बाद पढ़ने की समझ में उद्देश्य सिद्ध प्रदर्शन प्रस्तुत करने में सक्षम थे, हालांकि यह पाया गया कि पढ़ने की रणनीतियों के उपयोग के बारे में मेटाकॉग्निटिव जागरूकता में ईएफएल और ईएसएल शिक्षार्थियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। दूसरी ओर, यह पाया गया कि रणनीति हस्तक्षेप कार्यक्रम ईएफएल और ईएसएल दोनों संदर्भों के लिए समान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, हालांकि वे सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से भिन्न हैं।

चेज (2012) ने विद्यार्थियों के पढ़ने की समझ और अकादमिक प्रदर्शन के बीच संबंधों की जांच करता है। पढ़ने की समझ पर लिंग के प्रभाव के परीक्षण में, महत्व के टी-परीक्षण का उपयोग किया गया था। पठन-पाठन में बालक-बालिकाओं के प्रदर्शन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसके अलावा, पढ़ने की समझ और अकादमिक प्रदर्शन के बीच प्राप्त सहसंबंध मूल्यों का लिंग अंतर के लिए परीक्षण किया गया था। यह पाया गया कि जीएचसी में सभी विषय क्षेत्रों में लड़कियों की तुलना में लड़कों के लिए सभी सहसंबंध मूल्य अधिक थे। इसके अलावा, पढ़ने की समझ और गणित और विज्ञान के बीच सहसंबंध मूल्य लड़कियों के लिए महत्वपूर्ण नहीं थे। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि जिन विषयों पर विचार किया गया उनके अकादमिक प्रदर्शन से संबंधित पढ़ने की समझ, और इसलिए हमारे विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए विचार करने का एक कारक है।

चेल्लामणि (2013) ने पाया कि मेटा-संज्ञानात्मक रणनीति के उपयोग और संज्ञानात्मक नियंत्रण प्रक्रिया ने पढ़ने की समझ को प्रभावित किया है। मेटा-संज्ञानात्मक रणनीतियों पर उनकी जागरूकता और उनकी पढ़ने की समझ के बीच महत्वपूर्ण सहसंबंध विकसित आत्म-जागरूकता और पढ़ने की समझ को दर्शाता है। उपचार के निष्कर्षों ने छात्रों के बीच कौशल के विकास की संभावना को साबित कर दिया जिससे उन्हें पढ़ने की समझ कौशल हासिल करने में मदद मिली।

महासिन मोहम्मद अहमद सुलेमान (2014) ने सामाजिक आर्थिक कारकों पर ध्यान केंद्रित किया जो खार्तूम में माध्यमिक विद्यालयों में विदेशी भाषा सीखने वालों को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्यों को निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित किया गया है: खार्तूम में जेबेल औलिया में माध्यमिक विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा के छात्रों पर सामाजिक आर्थिक कारकों के प्रभाव को मापने के लिए और अंग्रेजी भाषा पर शिक्षार्थियों के परिवारों के सामाजिक संबंधों और आर्थिक स्थिति के प्रभाव का परीक्षण करने के लिए इसके अलावा, अंग्रेजी भाषा सीखने वालों पर स्कूल के माहौल के प्रभाव का परीक्षण करने के लिए। इस अध्ययन में इस्तेमाल की जाने वाली विधि एक वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक विधि है, क्योंकि अध्ययन मुख्य रूप से वर्तमान घटना से संबंधित सटीक समंक एकत्र करने और अंततः परिणाम से निष्कर्ष निकालने पर आधारित है। प्राप्त किया। शोधकर्ता ने प्रश्नावली का उपयोग समंक एकत्र करने के उपकरण के रूप में किया। समंक जो प्राप्त किया गया था, अध्ययन के तहत समस्या के प्रति विषयों के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। समंक के विश्लेषण और व्याख्या के लिए एसपीएसएस (सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज) का एक सांख्यिकीय उपयोग किया गया था। समंक का विश्लेषण करने के बाद अनुसंधान परिकल्पनाओं का सावधानीपूर्वक परीक्षण किया गया जिससे निष्कर्ष

निकले। सामाजिक आर्थिक कारक अंग्रेजी भाषा सीखने वालों को भाषा में अपने मानक में सुधार करने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लेइट, एट अल। (2015) ने पाया कि वे परिवार ज्यादातर गरीब थे, खराब शिक्षा के साथ, और पढ़ने और लिखने के लिए कम समर्थन और प्रोत्साहन के साथ सांस्कृतिक वातावरण से आए, उनके बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन में परिणाम हो सकते हैं। पारिवारिक संस्कृति का प्रभाव यह भी पाया जा सकता है कि बच्चों में विशिष्ट क्षमताओं का विकास, जिनमें से कुछ विशेषाधिकार प्राप्त हैं और स्कूल में प्रबलित हैं, जैसे पढ़ना और लिखना। इसके अलावा, परिवार स्कूल को जो मूल्य देता है, वह बच्चे द्वारा वस्तु लेखन को दिए गए प्रतिनिधित्व के लिए एक अंतर पैदा कर सकता है, बाद में, जब वे औपचारिक शिक्षा शुरू करते हैं। जिन माता-पिता की स्कूल तक पहुंच नहीं थी, वे अपने बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को पर्याप्त महत्व नहीं दे सकते हैं, और यह तथ्य उन्हें बच्चों की साक्षरता को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने की अनुमति नहीं देता है।

अकबसली, साहिन और याकिरन (2016) ने पाया कि जो छात्र पढ़ने में सफल होते हैं, वे गणित और विज्ञान की कक्षाओं में भी बड़ी सफलता दिखाते हैं। जिन छात्रों के पास अपने परिवार का समर्थन है, वे उन छात्रों की तुलना में अधिक उपलब्धि दिखाते हैं जिनके पास परिवार का समर्थन नहीं है। पढ़ने का उन कक्षाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है जिनके लिए गणित और विज्ञान जैसी मात्रात्मक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है।

पाब्लो और जीसस (2017) ने चिली में रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन के क्षेत्र में इस्तेमाल किए गए मानकीकृत परीक्षणों के परिणामों में सार्वजनिक और निजी स्कूलों में पाए गए अंतर से जुड़े सबूत दिखाए हैं। शिक्षा में गुणवत्ता की माप प्रणाली के रूप में स्थापित इन परीक्षणों ने पब्लिक स्कूलों के लिए अलग-अलग परिणाम प्रदान किए हैं - जहां मुख्य रूप से कमजोर छात्र भाग लेते हैं, और निजी स्कूल - जहां मुख्य रूप से अधिक संसाधन वाली आबादी होती है। इस अध्ययन में बहुस्तरीय विश्लेषण के एक मॉडल का उपयोग किया गया है जिसका उद्देश्य यह मूल्यांकन करना है कि क्या प्रासंगिक चर (परिवार के आर्थिक स्तर से जुड़े) के समूह के बीच संबंध स्कूलों के वित्त पोषण स्रोत के संबंध में पढ़ने की समझ के प्रदर्शन पर भिन्न प्रभाव डालता है। परिणाम इस बात का प्रमाण दिखाते हैं कि पढ़ने की समझ में परिवर्तनशीलता के 15% के लिए स्कूल के प्रकार खाते हैं, इस परिवर्तनशीलता का लगभग आधा सामाजिक आर्थिक स्तर समूह के चर द्वारा समझाया जा सकता है, और व्यक्तिगत चर के समूह द्वारा केवल शेष 1% माता-पिता के शिक्षा स्तर और छात्रों के प्रदर्शन के बारे में उनकी अपेक्षाओं के रूप में। उपयोग किए गए मॉडलों की प्रासंगिकता पर आगे चर्चा की जा सकती है।

जेमेचु अबेरा गोबेना (2018) ने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव की जांच की। वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान डिजाइन नियोजित किया गया था। परिणामों ने हमें दिखाया कि सबसे पहले, पारिवारिक आय ने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कुछ भी नया नहीं लाया; दूसरा, सेक्स और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध था; अंत में, पारिवारिक शिक्षा स्तर ने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में 40.96% (R2*100%) का योगदान दिया जबकि 59.04% (1R2*100%) अस्पष्टीकृत चर थे जिन्होंने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में योगदान दिया। यह अनुशंसा की गई थी कि परिवारों को अपने बच्चों को स्कूलों में प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा का उपयोग करना चाहिए। इसके अलावा, निम्न आर्थिक स्थिति के बच्चों को राष्ट्र में बच्चों के बीच सामंजस्य बनाए रखने के लिए

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उच्च आर्थिक माता-पिता के बच्चों के समान अवसर प्रदान करने के लिए सामाजिक आर्थिक नीतियां तैयार की जानी चाहिए।

मर्सिडीज स्पेंसर (2019) के अनुसार 271 देशी अंग्रेजी बोलने वाले 9.00 से 14.83 साल के बच्चों के नमूने में मौखिक भाषा, डिकोडिंग और कार्यकारी कार्य के दो घटकों (संज्ञानात्मक लचीलेपन और कामकाजी स्मृति) और पढ़ने की समझ के बीच संबंधों की जांच करती है। मध्यस्थता विश्लेषण के परिणामों ने संकेत दिया कि मौखिक भाषा और डिकोडिंग दोनों ने कार्यशील स्मृति और संज्ञानात्मक लचीलेपन और पढ़ने की समझ के बीच संबंधों को पूरी तरह से मध्यस्थ किया। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि कार्यकारी कार्य डिकोडिंग और मौखिक भाषा के साथ अपने संबंध के माध्यम से पढ़ने की समझ के साथ जुड़ा हुआ है और कुशल पढ़ने के संभावित महत्वपूर्ण अग्रदूत के रूप में समझ को पढ़ने में कार्यकारी कार्य की भूमिका के लिए अतिरिक्त सहायता प्रदान करता है।

नेस्लिहान कोसे और फिरदेव्स गुनेस (2021) ने पढ़ने के दौरान स्नातक छात्रों के बीच मेटाकोग्निटिव रणनीतियों के कथित उपयोग की जांच की, जिसमें पढ़ने से पहले, दौरान और बाद में मेटाकोग्निटिव रणनीतियों का उपयोग शामिल है। पाया गया कि नमूना समूह के बीच समग्र रणनीति का उपयोग "उच्च" था। क्या लिंग, ग्रेड, संकाय और विभाग के आधार पर पढ़ने में छात्रों की रणनीतियों के कथित उपयोग के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर था, इसकी जांच की गई। परिणामों ने लिंग और ग्रेड स्तर के आधार पर एक महत्वपूर्ण अंतर का संकेत दिया। अंत में, यह पाया गया कि जैसे-जैसे वर्णनात्मक ग्रंथों में पढ़ने की समझ बढ़ी, वैसे-वैसे रणनीति का उपयोग समग्र पैमाने के साथ-साथ ग्लोबल रीडिंग स्ट्रैटेजीज़ और प्रॉब्लम सॉल्विंग स्ट्रैटेजीज़ सब-स्केल्स में भी हुआ।

आइरीन कैडिम एट अल। (2022) का उद्देश्य तीसरी कक्षा के छात्रों की पढ़ने की समझ पर इसके प्रभावों का परीक्षण करना और लिंग और सामाजिक आर्थिक स्थिति (एसईएस) के कार्य के रूप में अंतर प्रभावों का पता लगाना था। पठन का अंतिम लक्ष्य समझ है, लेकिन कई बच्चे इस कौशल को विकसित करने के लिए संघर्ष करते हैं। इसके अलावा, निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के लड़कों और बच्चों में पढ़ने की समझ में कठिनाइयाँ अधिक प्रचलित हैं। बुनियादी पठन कौशल, जैसे कि डिकोडिंग में महारत हासिल करना आवश्यक है, लेकिन अधिकांश समय, यह पढ़ने की समझ के उच्च स्तर को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हाल के वर्षों में, शोध परिणामों ने सुझाव दिया है कि छात्रों के लिए मेटाकॉम्प्रिहेंशन और पढ़ने की रणनीतियों को पढ़ाने से उनकी समझ में सुधार हो सकता है। सीखने के लिए सीखने का कार्यक्रम पुर्तगाल में प्राथमिक शिक्षा के छात्रों को रणनीतियों के इस सेट को पढ़कर समझ को बढ़ावा देने के लिए विकसित किया गया था।

शोध क्रिया विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का प्रमुख चर "पहली भाषा (हिन्दी)" में पढ़ने की समझ कौशल है। तथा इस अध्ययन में श्रेणीगत चर के रूप में लिंग (पुरुष और महिला छात्र) का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए भौगोलिक स्थिति के आधार पर प्रयागराज जिले के सभी आठ तहसीले सदर, मेजा, करछना, बारा, सोरांव, फूलपुर, कोरांव और हंडिया को चुना गया था। शोधार्थी ने विद्यालयों का निर्धारण कर नमूना आकार को 500 का आंकड़ा लिया।

तालिका 1: लिंग का टी-परीक्षण: समूह सांख्यिकी

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 02, February- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

	लिंग	N	माध्य	मानक विचलन	मानक त्रुटि माध्य
'पढ़ने की समझ' _ बहुविकल्पीय परीक्षण	पुरुष छात्र	205	18.593	5.577	.333
	महिला छात्र	295	19.926	4.534	.226
'पढ़ने की समझ' _ क्लोज परीक्षण	पुरुष छात्र	205	16.900	10.577	.632
	महिला छात्र	295	18.610	10.119	.503
दोनों परीक्षण में 'पढ़ने की समझ' (बहुविकल्पीय परीक्षण और क्लोज परीक्षण)	पुरुष छात्र	205	35.493	14.695	.878
	महिला छात्र	295	38.535	13.003	.647

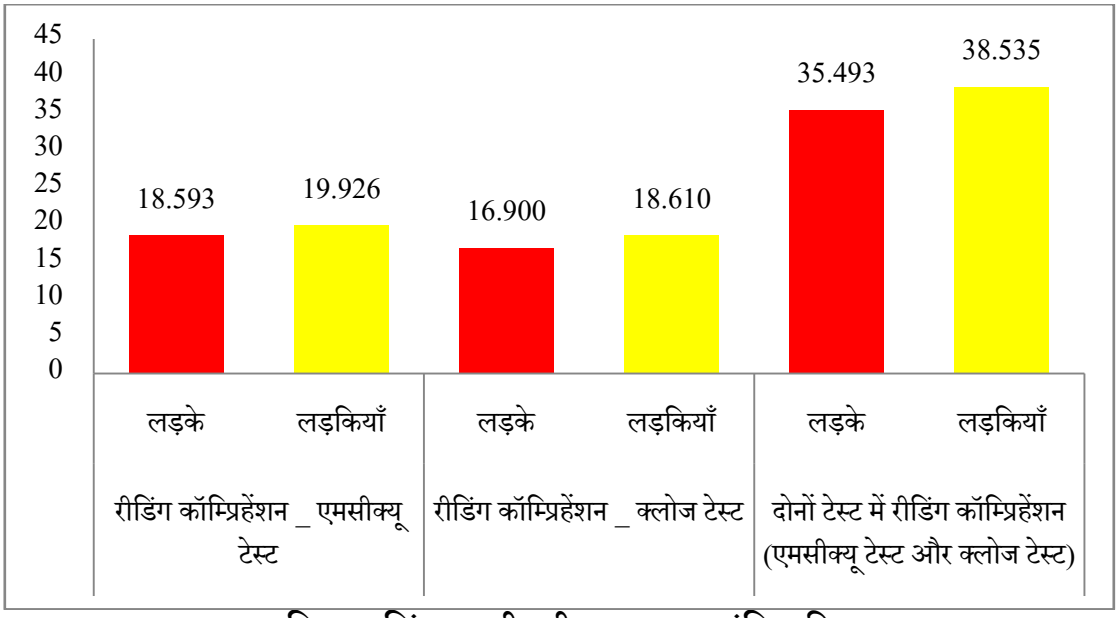

चित्र 1: लिंग का टी-परीक्षण: समूह सांख्यिकी

वर्णनात्मक तालिका 1 कुछ बहुत ही उपयोगी वर्णनात्मक आँकड़े प्रदान करती है, जिसमें आश्रित चर (लिंग) के नमूने, माध्य और मानक विचलन की संख्या शामिल है।

तालिका 2: स्वतंत्र नमूने का परीक्षण _ बहुविकल्पीय परीक्षण

	भिन्नता की समानता के लिए लेवेन का परीक्षण		माध्य की समानता के लिए टी-परीक्षण		
	एफ	सिग.	टी	डीएफ	सिग. (2.टेल्ड)
समान प्रसरण नहीं माना गया	26.102	0.00	-3.312	517.945	0.001

* औसत अंतर 0.05 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।

विचरण की एकरूपता का परीक्षण करने के लिए, लेवेन के परीक्षण में भिन्नता की समानता पर विचार किया गया था। यह दर्शाता है कि बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षण में लड़कों और लड़कियों का F मान 26.102 है और p मान 0.00 है जो 0.05 से कम है, इसलिए समंक में समान विचरण नहीं माना जाता है।

(http://www-01.ibm.com/support/docview.wss?uid=swg21497421)

तालिका 2 से पता चलता है कि t मान 3.312 है जिसमें df 517.945 है और p मान 0.001 (p<0.05) है। इसका मतलब है कि टी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षण में प्रदर्शन के मामले में पुरुष और महिला छात्रों में काफी अंतर होता है।

तालिका 3: स्वतंत्र नमूना परीक्षण _ क्लोज परीक्षण

	भिन्नता की समानता के लिए लेवेन का परीक्षण		साधनों की समानता के लिए टी-परीक्षण		
	एफ	सिग.	टी	डीएफ	सिग. (2.टेल्ड)
समान प्रसरण नहीं माना गया	3.901	.049	-2.115	496	.035

* औसत अंतर 0.05 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।

विचरण की एकरूपता का परीक्षण करने के लिए, लैवेन के परीक्षण में भिन्नता की समानता पर विचार किया गया था। यह दर्शाता है (तालिका 3) कि क्लोज परीक्षण में पुरुष और महिला छात्रों का F मान 3.901 है और p मान 0.049 है जो 0.05 से कम है, इसलिए समंक में समान भिन्नताएं नहीं मानी जाती हैं (http://www-01.ibm. com/support/docview.wss?uid=swg21497421)।

तालिका 5.13 यह भी दर्शाती है कि टी मान -2.115 df = 498 के साथ और p मान 0.035 (p< 0.05) है। इसका मतलब है कि टी सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षण में प्रदर्शन के मामले में पुरुष और महिला छात्रों में काफी अंतर होता है।

तालिका 4: स्वतंत्र नमूने परीक्षण दोनों परीक्षण (बहुविकल्पीय परीक्षण और क्लोज परीक्षण)

	भिन्नता की समानता के लिए लेवेन का परीक्षण		माध्य की समानता के लिए टी-परीक्षण		
	एफ	सिग.	टी	डीएफ	सिग. (2.टेल्ड)
समान प्रसरण नहीं माना गया	8	.004	-2.789	492	.005

* औसत अंतर 0.05 के स्तर पर महत्वपूर्ण है।

विचरण की एकरूपता का परीक्षण करने के लिए, लैवेन के परीक्षण में भिन्नता की समानता पर विचार किया गया था। यह दिखाता है (तालिका 4) कि दोनों परीक्षण (बहुविकल्पीय और क्लोज परीक्षण) में पुरुष और महिला छात्रों का एफ वैल्यू 8 है और पी वैल्यू 0.004 है जो 0.05 से कम है, इसलिए समंक में समान भिन्नताएं नहीं मानी गई।

तालिका 4 यह भी दर्शाती है कि t मान 2.789 है जिसमें df मान 492 है और p मान 0.005 (p<0.05) है। इसका अर्थ है कि t = 0.05 के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की

जाती है। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षण में प्रदर्शन के मामले में पुरुष और महिला छात्रों में काफी अंतर है।

निष्कर्ष

अध्ययन से ये निष्कर्ष निकाला गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पुरुष और महिला छात्रों के बहुविकल्पीय परीक्षण के माध्यम से आयोजित प्रथम भाषा हिंदी में पढ़ने की समझ के प्रदर्शन में काफी भिन्नता है और महिला छात्रों का औसत स्कोर पुरुष छात्रों की तुलना में बेहतर है। तथा पुरुष और महिला छात्रों के क्लोज परीक्षण के माध्यम से आयोजित प्रथम भाषा हिंदी में पढ़ने की समझ के प्रदर्शन में काफी भिन्नता है और महिला छात्रों का औसत स्कोर लड़कों की तुलना में बेहतर है। साथ ही उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पुरुष और महिला छात्रों की पहली भाषा हिंदी के आधार पर पढ़ने की समझ के प्रदर्शन में काफी भिन्नता है, दोनों परीक्षण स्कोर (बहुविकल्पीय परीक्षण और क्लोज परीक्षण) और महिला छात्रों का औसत स्कोर पुरुष छात्रों की तुलना में काफी बेहतर है। निष्कर्ष और चर्चा के रूप में प्रस्तुत किए गए सुराग स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर पढ़ने को एक आनंददायक और उद्देश्यपूर्ण कार्य बनाने के लिए लक्षित आबादी के लिए उपयुक्त विकासशील तकनीकों की दिशा में विभिन्न कार्यक्रमों को डिजाइन करने के लिए चेतना पैदा कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चंद्रन, वाई., एंड शाह, पी. एम.) 2019(, आईडेन्टिफ्यिंग, लर्नर्स' डिफिकल्टिस इन इ एस एल रीडिंग कॉम्प्रिहेंसन, क्रेटिव, एजुकेसन, 10, 3372- ।3384https://doi.org/10.4236/ce.2019.।1013259
2. क्रशेन, एस., एंड ब्राउन, सी.एल. (2007), व्हाट ईज अकादमिक लैंग्वेज प्रोफिसिएंसी ? एस टी इ एस लैंग्वेज एंड कम्युनिकेशन रिव्यु, 6(1), 1-5.
3. गार्नहम, ए. (2001), मेन्टल मॉडल्स, मनोविज्ञान प्रेस।
4. गर्नस्बैकर, एमए (1990), लैंग्वेज कॉम्प्रिहेंसन एज स्ट्रक्चर बिल्डिंग, हिल्सडेल, एनजे: एर्लबाम।
5. भट्टाचार्य, (2010) मक्सिमिज़िंग बिज़नेस रिटर्न्स टू कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सीएसआर): द रोल ऑफ़ सीएसआर कम्युनिकेसन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंट रिव्यूज़ , 12, 8-19. https://doi.org/10.1111/j.1468-2370.2009.00276.x
6. करबलाई, ए (2011) द इफ़ेक्ट ऑफ़ मेटाकोग्निटिव स्ट्रेटेजीज ट्रेनिंग ऑन ईएफएल और ईएसएल लर्नर्स रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन। यूनिवर्सिटी ऑफ़ मैसूर।
7. चेज, ई.डब्ल्यू. (2012) रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन एंड इट्स रिलेशनशिप विथ अकादमिक परफॉरमेंस अमंग स्टैण्डर्ड एठ प्यूपिल्स इन रूरल मचाकोस। मास्टर थीसिस, केन्याटा यूनिवर्सिटी। नैरोबी।
8. चेल्लामणि, के. (2013) एक्टिवेटिंग मेटाकोग्निटिव स्ट्रेटेजीज ऑन एन्हान्सिंग रीडिंग स्किल अमंग हाई स्कूल स्टूडेंट्स, पांडिचेरी यूनिवर्सिटी, इंटरनेशनल जर्नल एडु। साइंस, 5(2), 159-162
9. महासिन मोहम्मद अहमद सुलेमान (2014) "सोसिओ-इकनोमिक फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग इंग्लिश लैंग्वेज लर्नर्स", सूडान यूनिवर्सिटी ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, http://repository.sustech.

10. लेइट, एट अल। (2015) फेटोरेससोशियोकल्चराईसेनवोल्विडोस नो प्रोसेसो डे एक्विसकाओ डा लिंगुएजमेस्क्रिटा। रेविस्टा सीईएफएसी, 17(2), 492-501। https://dx.doi.org/10.1590/1982-021620153414
11. अकबसली, याकिरन, जेड (2016) द इफ़ेक्ट ऑफ़ रीडिंग कम्प्रेजीशन ऑन द परफॉर्मेंस इन साइंस एण्ड मैथमैटिक, जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एण्ड प्रैक्टिस। 7. 108 -121.
12. पाब्लो एंड जीसस (2017) "द इफ़ेक्ट ऑफ़ कॉटेक्सटुअल एंड सोसिओ-इकनोमिक फैक्टर्स ऑन रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन लेवल", मॉडर्न जर्नल ऑफ लैंग्वेज टीचिंग मेथड्स (एमजेएलटीएम), वॉल्यूम -7, इशू 8 अगस्त (2017) 076–085.
13. जेमेचु अबेरा गोबेना (2018) फैमिली सोसिओ-इकोनॉमिक स्टेटस इफ़ेक्ट ऑन स्टूडेंट, अकैडमिक अचीवमेंट एट कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन एण्ड बिहेवियरल साइंस, हरम्या यूनिवर्सिटी, ईस्टर्न इथोपिया", जर्नल ऑफ़ टीचर एजुकेशन एण्ड, वॉल्यूम 7 , नंबर 3 , 207- 222.
14. मर्सिडीज स्पेंसर (2019) "कन्सिडरिंग द रोल ऑफ़ एग्जीक्यूटिव फंक्शन इन रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन: ए स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडलिंग अप्रोच" अगस्त 2019, साइंटिफिक स्टडीज ऑफ रीडिंग 24(3):1-21, DOI:10.1080/10888438.2019.1643868.
15. नेस्लिहान कोसे और फिरदेव्स गुनेस (2021) "अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट्स' यूज़ ऑफ़ मेटाकॉग्निटिव स्ट्रेटेजीज़ जबकि रीडिंग एंड द रिलेशनशिप बिटवीन स्ट्रैटेजी यूज़ एंड रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन स्किल्स", फरवरी 2021, जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड लर्निंग 10(2:99, डीओआई:10.5539/जेल) .v10n2p99.
16. आइरीन कैडिम एट अल (2022) "टीचिंग रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन स्ट्रेटेजी: डिफरेंशियल इफेक्ट्स ऑफ एन इंटरवेंशन प्रोग्राम ऐज ए फंक्शन ऑफ जेंडर एंड सोसिओ इकोनॉमिक स्टेटस", जनवरी 2022, डीओआई: 10.52305/वीजेडब्ल्यूएच9290